चूर्णी फफूँद (**Powdery Mildew**) रोग फसल को प्राय: नुकसान पहुँचाती है। इस रोग में पत्तियों पर छोटे–छोटे रूई के समान सफेद धब्बे बनते हैं जो बाद में पूरी पत्तियों में फैल जाते हैं। रोग की उग्र अवस्था में पत्तियाँ पूरी तरह सड़ जाती है। इस रोग से फसल को बचाने के लिए 0.3: सल्फेक्स का छिड़काव करना चाहिए।

चूर्णी फफूँद रोग के अतिरिक्त **Cercospora** और **Alternaria** फफूँद के कारण पत्र लॉछन रोग का आक्रमण होता है। रोग के कारण पत्तियों पर अनियमित आकार के गोल धब्बे बनते हैं। रोग के लक्षण देखते ही इन्डोफिल M45 के 2 ग्राम फफूँद नाशक को प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिनों के अन्तराल पर 2–3 बार छिड़काव करें।

कटाई एवं गुड़ाई :–

फसल पकने पर पौधों की पत्तियाँ तथा सिरे भूरे रंग के हो जाते हैं और सूखने लगते हैं। ऐसे समय में फसल की कटाई करनी चाहिए। पौधों को कुछ दिनों के लिए सूखने के लिए छोड देना चाहिए । सूखने पर डंडा से पीटकर बीजों को अलग करके सफाई कर लेनी चाहिए। बीजों को भली–भाँति साफ एवं सुखाकर भंडारण करना चाहिए। इसके लिए मिट्टी के बर्ततनों या कोठी या ठपदे का उपयोग करना चाहिए।

संभावित उपज :–

उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाने से फसल की औसत उपज 6/8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हो सकती है।

फसल पद्धति :– क्रमिक फसल के रूप में गुंदली–सरगुजा आगात धान (गोड़ा) सरगुजा तथा उड़द सरगुजा की खेती सफलता पूर्वक की जा सकती है।

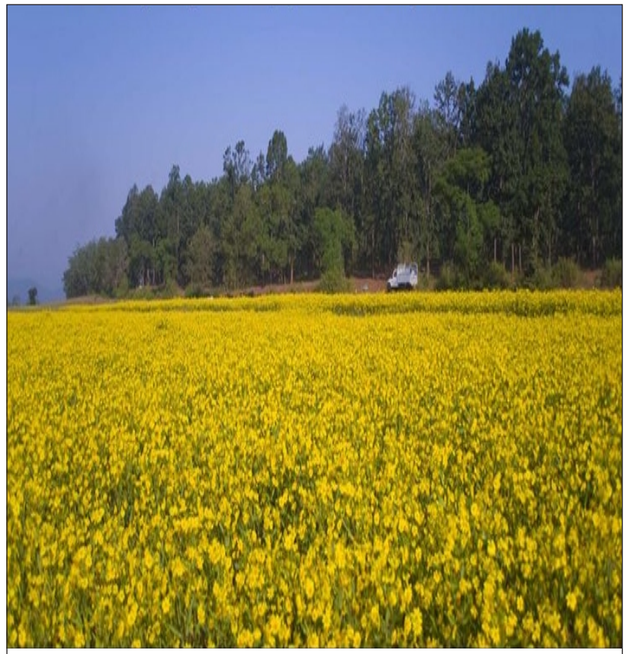

लेखक

डॉ0 अनिल कुमार, वैज्ञानिक (उद्यान) प्रधान, के0वी0के0, धनबाद
डॉ0 आदर्श कुमार श्रीवास्तव, वैज्ञानिक (प्रसार शिक्षा) के0वी0के0, धनबाद
डॉ नवीन कुमार, वैज्ञानिक (पौधा संरक्षण) के0वी0के0, धनबाद
डॉ नन्दना कुमारी, वैज्ञानिक (गृह विज्ञान) के0वी0के0, धनबाद
श्री रमन कुमार श्रीवास्तव (कार्यक्रम सहायक) के0वी0के0, धनबाद
श्री संजय कुमार (प्रक्षेत्र प्रबंधक) के0वी0के0, धनबाद
श्री देव प्रकाश शुक्ला (सहायक) के0वी0के0, धनबाद

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
कृषि विज्ञान केन्द्र, धनबाद
मोबाईल नं0 : +91 9431176741

Jharkhand Printers, Balapur 7250233700

संकुल अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण तेलहन अंतर्गत
तकनीकी प्रसार पुस्तिका - 2/2025-26

झारखण्ड में सरगुजा की उन्नत खेती

कृषि विज्ञान केन्द्र

धनबाद, बलियापुर

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची

सरगुजा (**Niger**) झारखण्ड राज्य की प्रमुख तेलहनी फसल है। सरगुजा को रामतिल के नाम से भी जाना जाता है। इसका क्षेत्र–फल करीब 27 हजार हेक्टेयर है और औसत उपज 500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। झारखण्ड राज्य में इसकी खेती खरीफ में कुछ विलम्ब से की जाती है। पठारी क्षेत्रों के किसान इसकी खेती सदियों से करते आ रहे हैं। इसके तेल को खाने के अलावा दवाई के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। किसान इसकी खेती अधिकतर कम उपजाऊ वाले जमीन में करते हैं। इसलिए इसकी उत्पादकता काफी कम हो जाती है। यह फसल जनजातीय क्षेत्रों को सीमांत और उपसीमान्त भूमि में व्यापक पैमाने पर लगाई जाती है। अच्छी गहराई और अच्छी बनावट वाली दोमट मिट्टी में जहाँ पानी की निकासी की अच्छी व्यवस्था होती है, यह फसल अच्छी उपज देती है। विषम परिस्थितियों में द्वितीय फसल के रूप में गुन्दली, उरद व गोड़ा धान काटने के बाद इसकी खेती इन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर की जाती है। तेल की मात्रा 35 से 45: एवं प्रोटीन की मात्रा 25 से 35 होने के कारण यह फसल महत्वपूर्ण मानी जाती है। उन्नत कृषि तकनीकों को नहीं अपनाने के कारण उन्हें कम उपज प्राप्त होती है। किसानों द्वारा सरगुजा की कम उपज प्राप्त होने के निम्नलिखित मुख्य कारण है।

- उन्नत किस्मों के बीजों का अभाव,
- खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग न करना,
- बीजों को छींटकर लगाना,
- पौधा संरक्षण के उपाय नहीं अपनाना तथा
- प्रशिक्षण एवं प्रसार कार्यों का अभाव

अधिक उपज प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित उन्नत कृषि तकनीकों पर ध्यान देना आवश्यक है।

खेत की तैयारी :–

देशी हल के द्वारा खेतों को दो बार गहरी जुताई कर पाटा लगा देने से खेत सरगुजा की बुआई के लिए अच्छी तरह तैयार हो जाता है। अंतिम जुताई के समय लिंडेन धूल 25 किद्ग ग्राद्ग प्रति हेद्ग के दर से जमीन में मिला देने से दीमक का प्रकोप कम हो जाता है।

उन्नत किस्में :–

झारखण्ड राज्य के लिए बिरसा नाईजर 1 एवं बिरसा नाईजर–2 उन्नत किस्मों को अनुशंसित किया गया है। बिरसा नाईजर–1 किस्म 100 दिनों में पक जाती है। इसकी उपज क्षमता 7 क्वींटल प्रति हेक्टेयर है एवं बीजों में 41: तेल पाया जाता है। बिरसा नाईजर 2, 90 दिनों में पकने वाली सबसे कम अवधि की किस्म है। इसकी उपज क्षमता 8 क्वींटल प्रति हेक्टेयर है एवं बीजों में 39: तेल पाया जाता है। बिरसा नाईजर–3 एवं पूजा सरगुजा की नयी उन्नत किस्में हैं।

बीज दर :–

इस फसल के लिए पंक्तियों में लगाने वाले 6 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है, परन्तु छिड़काव विधि से बुआई करने पर प्रति हेक्टेयर 8 किलो ग्राम बीज की जरूरत होती है।

बीजों का उपचार :–

बीज जनित या मृदा जनित रोगों से फसल को बचाव के लिए बोने से पहले बीजों को थीरम या कैप्टन 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।

बुआई का समय :–

सरगुजा की बुआई मुख्यतः दो समयों पर की जाती है। खरीफ की फसल के लिए बुआई का उपयुक्त समय जुलाई से अगस्त का तीसरा सप्ताह, तथा द्वितीय फसल के लिए सितम्बर का दूसरा सप्ताह से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह का समय उपयुक्त है।

बुआई की विधि :–

फसल को छिड़काव विधि से लगाने की अपेक्षा कतारों में लगाने से अधिक उपज प्राप्त होती है। अतः फसल को कतारों में ही लगाये। कतारों से कतारों की दूरी 30 सेद्गमीद्ग, तथा पौधों से पौधों की दूरी 10–15 सेद्गमीद्ग रखने से पौधों की संख्या 2 से 2.5 लाख प्रति हेक्टेयर होती है। बीजों के समान वितरण हेतु बीज को दस गुने गोबर की खाद या बालू में मिलाकर बुआई करनी चाहिए।

रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग :–

अच्छी उपज के लिए 20:20:20 **Kg NPK** प्रति हेक्टेयर (45 किलो ग्राम यूरिया, 130 किलो ग्राम सिंगल सुपर फॉस्टफेट, एवं 32 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रति हेक्टेयर की दर से डालना चाहिए नेत्रजन की आधी तथा सिंगल सुपर फश्वस्फेट एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय दें। नेत्रजन की शेष आधी मात्रा बुआई के 25–30 दिनों के बाद निकाई–गुडाई करने के बाद यूरिया द्वारा डालनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण :–

बुआई के 20–25 दिनों के बाद खेत से खरपतवार खुरपी द्वारा निकाल देना चाहिए। साथ ही अनावश्यक पौधों की छटनी कर देनी चाहिए। दो बार गुडाई कर खरपतवार पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

पौधा संरक्षण :–

अधिक उपज के लिए पौधा संरक्षण बहुत जरूरी है। वैसे इस फसल में रोग एवं कीटों का प्रकोप बहुत कम होता है। कीटों में मुख्यतः भुआ पिल्लू का आक्रमण होता है। छोटी अवस्था में ये अधिकतर पत्तियों के नीचे गुच्छों में रहते हैं। ये नई पत्तियों को खा जाते हैं, जिससे पौधों की बढ़वार नहीं हो पाती है। इस अवस्था में उनकी रोकथाम करना आसान होता है। ऐसे समय में उन पत्तियों को तोडकर नष्ट कर देना चाहिए या फसल के ऊपर कीटनाशक दवा के रूप में छनअंद 100 का 300 मि0ली0, 800 लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर कीदर से छिड़काव करना चाहिए।